आत्मा का होता परमात्मा से मिलन***
अखंड ज्योति से है आत्मज्योति जलती***
शक्तियों को होता संचार***
ज्ञान योग के है पंख मिलते***
रूह की होती सुप्रीम रूह से रिहान***
मंगल मिलन की होती अनुभूति***
कल्प में होता यह एक ही बार***
संगम पर होता प्रभु का अवतार***
शुद्र से ब्राह्मण हम बनते***
करके अपना नित नया ज्ञान श्रृंगार***
धरती बदलती होता विश्व का नव निर्माण***
सुख शांति की होती वर्षा प्रेम का बनता पूरा संसार***
भारत बनता स्वर्ग सोने की चिड़िया करती उसमें बसेरा***
सच खंड की होती स्थापना चलते सब सतमार्ग***
संगम पर ही लगता त्रिवेणी का मेला***
आत्मा की परमात्मा से होता रूहानी मिलन***
ब्रह्म मूर्त है कर ले इसको अब सफल***
कर ले अब मानव तू प्रभु से यह मिलन***

चला न जाए यह वेला वक्त का कर न ऐतबार***
प्रेम अगन से लगन लगा ले ***
प्रभु मिलन की कर आरती ही मिल सब जन***

ॐ शांति